‘बुढ़िया की रोटी’ कहानी का समाजशास्त्र

नंदा शर्मा

चित्र : 1

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन ने मध्यप्रदेश में झोला पुस्तकालय की शुरुआत की है। झोला पुस्तकालय की संकल्पना इस उद्देश्य से की गई है कि बच्चों को उनकी उम्र व रुचि को ध्यान में रखते हुए पठन सामग्री उपलब्ध करवाई जाए। झोला पुस्तकालय कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। इस झोले में एक सोची-समझी रणनीति के तहत बाल साहित्य व शिक्षकों के लिए शैक्षिक पुस्तकों का चयन किया गया है। इस झोला पुस्तकालय की किताबें बच्चों तक पहुँचाना ही हमारा मक़सद नहीं है बल्कि इनके माध्यम से पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित करना और कहानी के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता, संवेदना, तार्किकता, अभिव्यक्ति और समाज बोध के कौशलों का विकास भी करना है।

झोला पुस्तकालय के इन्हीं उद्देश्यों के साथ मैं प्राथमिक शाला जलकोटी पहुँची। जलकोटी गाँव महेश्वर से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर बसा है। आबादी 1100 के आसपास होगी। रोज़ी-रोज़गार की बात करें तो इस गाँव में खेती-किसानी के अलावा लोग रेत खनन या मकान बनाने के कामों में लगे हैं और गुजरात जाकर मज़दूरी जैसे दूसरे काम भी करते हैं।

मेरे झोले में कई तरह की किताबें थीं, पर दिमाग़ में चल रहा था कि बच्चों के साथ शुरुआत कैसे करूँ। क्योंकि कई दिनों के गैप के बाद बच्चों से मिलने का मौक़ा मिल रहा था।

जब प्राथमिक विद्यालय जलकोटी पहुँची तो शिक्षक व बच्चे धूप में बैठे हुए थे। शिक्षक ने अभी-अभी कविता पाठ करवाया था। कविता के

चित्र : 2

चित्र : 3

आधार पर पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ शब्दों को पहचानने की गतिविधि चल रही थी। तीसरी से पाँचवीं कक्षा के बच्चों को गणित के कुछ सवाल दिए गए थे। मैं बच्चों को देख रही थी। जाड़े में चल रही ठण्डी हवा में धूप ही बचाव का साधन बन पड़ती है। यहाँ पहली से पाँचवीं तक के बच्चे एक साथ ही बैठे हुए थे। इनमें पहली और दूसरी के बच्चों की पढ़ाई का सिलसिला नए सिरे से शुरू हो रहा था और तीसरी से पाँचवीं के बच्चों को 2 साल बाद फिर से पढ़ाई से जोड़ा और अपेक्षित दक्षताओं के क़रीब ले जाया जा रहा है। विविध कक्षाओं के बच्चों को एक साथ जोड़े रखने की चुनौती भी यहाँ थी।

मैंने सर से झोला पुस्तकालय के उपयोग के बारे में जानने की कोशिश की। सर का कहना था कि कहानी तो हावभाव के साथ सुना देते हैं लेकिन कहानी में आए विविध पहलुओं को पहचानकर उनपर चर्चा कैसे करवानी चाहिए, इसमें थोड़ी मदद की ज़रूरत है।

मैंने कहा, "ठीक है। आज हम किसी कहानी की किताब के साथ यह करके देखते हैं। आप मेरे साथ रहिए और बच्चों से बातचीत के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को नोट करते चलिए। साथ ही जब आप कोई बात कहना चाहते हों तो बेझिझक कह सकते हैं।"

कहानी से पहले कहानी का माहौल बनाना

मैंने बच्चों के बीच बैठते हुए सवाल किया, "आप सब बाहर क्या कर रहे हो?"

बच्चों ने ज़ोर से चिल्लाकर जवाब दिया, "हम धूप खा रहे हैं।"

मैंने हँसते हुए कहा, "अच्छा! धूप कैसे खा रहे हो? थाली में फैलाकर या कटोरी में उँड़ेलकर।"

बच्चों ने भी मस्ती में जवाब दिया, "पैर पर खा रहे हैं", कुछ ने कहा सिर पर, किसी ने कहा पीठ पर।

मैंने फिर पूछा, "तो आप मुँह से धूप नहीं खा रहे हैं।"

सभी ने चिल्लाकर कहा, "नहीं।"

बच्चों के साथ चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मैंने पूछा, "आपको भूख लगती है तो आप क्या-क्या खाते हैं?"

चित्र : 4

बच्चों ने अलग-अलग जवाब दिए, मसलन, रोटी, चावल, दाल, कुरकुरे, चिप्स, बिस्कुट आदि।

मैंने बच्चों से जानना चाहा, "आप लोगों को भूख लगती है तो आप क्या करते हैं?"

बच्चों ने बताया, "हम मम्मी से खाना माँगते हैं, बाज़ार से कुरकुरे या चिप्स ले आते हैं, या फिर कोई फल खा लेते हैं।"

सभी बच्चों में बताने का उत्साह अलग ही दिखाई दे रहा था।

मैंने बच्चों से उनकी मर्ज़ी जानी, "आज हम क्या करें? पहले कहानी सुनें या खेल खेलें?"

बच्चों का जवाब था, "कहानी सुनेंगे।"

चित्र : 5

यह तो मैं साफ़ देख पा रही थी कि बच्चों के शरीर के पोषण के लिए जितनी धूप ज़रूरी है, भूख मिटाने के लिए जितना खाना ज़रूरी है, वैसे ही कहानियों से मानसिक पोषण भी उतना ही ज़रूरी है।

एक लोककथा है 'बुढ़िया की रोटी'। इस कहानी में घटना और संवाद का दोहराव है, जो भाषा सीख रहे बच्चों की काफ़ी मदद करता है। इस कहानी के सभी पात्र बच्चों के आसपास के परिवेश में सहजता से दिखाई देते हैं। बच्चे इनके बारे में कुछ पूर्वज्ञान भी रखते हैं। भाषा में शब्द-वाक्य बनाने के स्तर को पार कर चुके बच्चे अपनी ओर से संवाद बनाने और हावभाव के साथ संवाद की अदायगी कर सकते हैं। कुछ बच्चे सोचकर कहानी को आगे भी बढ़ा सकते हैं। 'बुढ़िया की रोटी' कहानी में मुझे ये सारी सम्भावनाएँ दिखाई दे रही थीं। इसलिए मैंने आज इस किताब को बच्चों के बीच लाने का विचार बनाया।

बुढ़िया की रोटी किताब के लेखक शंकर हैं, चित्रांकन सुबीर राय ने किया है और सीबीटी ने प्रकाशित किया है।

कहानी एक छोटी-सी घटना से शुरू होकर आगे चलती है। एक बुढ़िया अपने लिए एक रोटी बनाती है जिसे एक कौवा ले जाकर पेड़ पर बैठ जाता है और बुढ़िया उस कौवे से गुहार लगाती है कि मेरी रोटी वापस कर दो पर वो उसे रोटी नहीं देता। वो गुहार लगाते हुए लकड़हारे के पास, चूहे और बिल्ली के पास जाती है, ताकि कोई उसकी मदद करे और कौवे पर दबाव बनाकर रोटी वापस दिलवा दे, लेकिन कोई भी बुढ़िया की मदद को तैयार नहीं होता। आख़िरकार वो कुत्ते के पास जाती है जो रोटी दिलवाने में मदद के लिए तैयार हो जाता है। एक बार फिर कुत्ते से बिल्ली-चूहा-लकड़हारा-पेड़-कौवे तक का सफ़र चलता है और बुढ़िया को उसकी रोटी वापस मिल जाती है। किताब के कवर पेज का चित्र दिखाकर मैंने पहली

और दूसरी कक्षा के बच्चों से जानना चाहा कि किताब में क्या कहानी बताई गई होगी। कवर पेज का चित्र देखकर बच्चों ने अन्दाज़ा लगाया।

किसी ने कहा, 'कौवे की कहानी', किसी ने 'पेड़ और कौवा', तो कुछ ने 'बुढ़िया की कहानी', 'बूढ़ी अम्मा की कहानी', 'ग़रीब बुढ़िया', 'प्यासा कौवा' आदि कहा। कुछ ने तो पेड़ और कौवे का अभिनय करते हुए कहानी का नाम बताया।

चित्र : 6

अब मैंने कहानी का टाइटल पेज दिखाया और तीसरी से पाँचवीं के बच्चों को पढ़कर बताने को कहा। कक्षा 5 की रानी ने 'बुढ़िया की रोटी' पढ़ी।

कहानी के बीच कहानी की यात्रा

बच्चे कहानी सुनने के लिए उत्सुक थे। मैंने सभी बच्चों की शामिलियत पुख़्ता करने के लिहाज़ से तय किया कि बच्चों के साथ धीरे-धीरे चित्र दिखाते हुए कहानी शुरू करना है। कक्षा एक और दो के बच्चों से चित्र देखकर यह अनुमान लगाने को कहना है कि क्या हो रहा है और तीसरी से पाँचवीं कक्षा के बच्चे बाद में इसे पढ़कर सुनाएँगे। बीच-बीच में जहाँ अभिनय की गुंजाइश होगी वहाँ मौक़े भी दिए जाएँगे।

चित्र : 7

कहानी शुरू होती है : एक बुढ़िया रोटी बनाती है और कौवा उसे ले जाता है। बुढ़िया अपनी रोटी वापस माँगने के लिए पेड़ से कौवे का घोंसला गिराने को कहती है, पेड़ नहीं सुनता तो लकड़हारे के पास जाकर पेड़ को गिराने को कहती है। लकड़हारा भी मना कर देता है। कहानी आगे बढ़ती है। अगले क्रम में बुढ़िया चूहे के पास जाकर लकड़हारे की कुल्हाड़ी काटने को कहती है। पर चूहा भी नहीं सुनता।

मैंने रुक कर पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों से पूछा, "बताओ, बुढ़िया अब किसके पास जाएगी?" बच्चों ने अनुमान लगाते हुए जवाब दिया, "बिल्ली के पास।" मैंने पूछा, "अच्छा ज़रा बताओ, बिल्ली से वो कैसे बात करेगी।"

तभी दूसरी कक्षा की ख़ुशी हाथ जोड़कर अभिनय करते हुए कहने लगी... "म्याऊँ-म्याऊँ बिल्ली मौसी मेरी कौवे से रोटी दिलवा दो, चूहा मेरी बात नहीं सुन रहा है।"

इस तरह कहानी आगे बढ़ती गई और अन्त में कौवा बुढ़िया को रोटी दे देता है। इस सुखद अन्त के साथ कहानी ख़त्म हुई।

कहानी के बाद कहानी पर बात

कहानी पूरी होते ही मैंने बच्चों से एक सवाल किया। आपको कहानी कैसी लगी। बच्चे शान्ति से इस कहानी में डूबकर बैठे दिखे जैसे वो अभी भी इसी के साथ रहना चाहते हों। मैंने थोड़ा रुक कर फिर सवाल किया, "कहानी कैसी लगी?" कुछ बच्चों को बुढ़िया को रोटी मिलने का सन्तोष था तो कुछ कौवे को रोटी न मिलने से निराश थे। किसी ने कहा कि अच्छा हुआ बुढ़िया को रोटी मिल गई तो कुछ ने कहा कि कौवा तो भूखा ही रहा गया।

ऐसा लगा मानो कहानी के अन्त में कक्षा दो भागों में बँट गई हो।

मैंने दूसरा सवाल किया, "आपको कहानी में सबसे अच्छा पात्र कौन-सा लगा और क्यों?"

बच्चों ने कुछ इस तरह अपने विचार बताए:

हमें कुत्ता बहुत अच्छा लगा क्योंकि उसने बुढ़िया की मदद की।

हमें बुढ़िया अच्छी लगी क्योंकि उसने सबसे मदद माँगी और एक कुत्ता भी पाला था जो सबकी मदद करता था।

हमें चूहा अच्छा लगा वो छोटा और बहुत प्यारा-सा था।

हमें तो पेड़ अच्छा लगा, उसने बुढ़िया की रोटी दिलवा दी।

चौथी कक्षा के सागर ने मेरे हाथ में से किताब जल्दी से लेते हुए कहा, "मुझे तो सबसे अच्छा कौवा लगा।"

मैंने जानना चाहा, "क्यों?"

उसने दुख भरे स्वर में कहा, "कौवे को भूख लगी थी तभी तो उसने बुढ़िया की रोटी को उठाया होगा, वरना क्यों उठाता। बुढ़िया तो एक और रोटी बना सकती थी। इससे कौवे को भी खाना मिल जाता। मुझे कौवे का सोचकर इसलिए भी बुरा लग रहा है कि उसने तो रोटी भी नहीं खाई और घोंसला भी टूट गया।"

तभी एक दूसरी बच्ची ने सागर की बात में अपनी बात जोड़ते हुए कहा, "मुझे भी बुढ़िया अच्छी नहीं लगी। उसने पेड़ तक को काटने की बात कर दी, वो भी एक रोटी के लिए। उस पेड़ को कितना दुख होता अगर उसकी डाल कट जाती!"

एक पक्ष कुनाल ने रखा, "चूहे और बिल्ली का तो झगड़ा ही नहीं था पर बुढ़िया ने इन दोनों को भी आपस में लड़वा दिया। वो सब आपस में दोस्त थे शायद!"

बच्चे बहुत ही संवेदनशीलता के साथ अपनी बात रख रहे थे। उनकी बात को कोई गम्भीरता से सुन रहा है और महत्त्व दे रहा है, यह ख़ुशी मैं उनके चेहरे पर साफ़ देख पा रही थी।

बच्चे भावनात्मक रूप से पात्रों से जुड़ते हुए अपनी बात रख रहे थे, किन परिस्थितियों में क्या निर्णय लिया या क्या लिया जा सकता था, इसकी पड़ताल भी लगातार कर रहे थे। मैं साफ़ देख पा रही थी कि कहानी इंसानियत पर भरोसा मज़बूत कर रही थी।

कहानी से जुड़ते तार

तभी इस चर्चा को और आगे बढ़ाने का सोचा। एनसीईआरटी की पर्यावरण की

चित्र : 8

पाठ्यपुस्तक में 'खाना अपना-अपना' पाठ के साथ भी सीधे जोड़कर देख पा रही थी। यहाँ एक अच्छा मौक़ा था कक्षा के बाहर की चर्चा को कक्षा की पाठ्यपुस्तक से जोड़ने का। उसी पाठ को जोड़ते हुए मैंने कक्षा में एक और सवाल किया, "आप सब भूख की बात कर रहे हैं तो कोई बताएगा भूख क्या होती है?"

तभी बहुत-से बच्चों ने कई अलग-अलग जवाब दिए, मसलन–

पेट में जब तेज़ दर्द होता है तो वो ही भूख है।

पेट में गुड़-गुड़ होता है। भूख से जान निकल जाती है।

भूख लगती है तो हमको ग़ुस्सा आने लगता है।

हमको जब भूख लगती है तो हम ज़ोर-ज़ोर से मम्मी-मम्मी चिल्लाने लगते हैं।

मैंने बच्चों से जानना चाहा, "अगर आपको ज़ोर से भूख लगी हो, आपकी मनपसन्द चीज़ खाने के लिए आपके पास हो और अचानक वह किसी के साथ बाँटकर खाना पड़े तो क्या ऐसा कभी आपने किया है?"

चित्र : 9

बच्चों ने सोचते हुए जल्दी से हाथ ऊपर करते हुए कहा, "हाँ।"

आरोही ने कहा, "हाँ, हमें मिठाई बहुत पसन्द है। हमने जो बिल्ली पाली है उसको हमने दी थी।"

कंचन ने कहा, "हाँ, मध्याह्न भोजन में जब हमारी सहेली का पेट नहीं भरता तो हम उसको अपने हिस्से की रोटी दे देते हैं।"

अब बच्चों से दूसरा सवाल किया, "आप रोज़ खाने में क्या खाते हैं?" बोर्ड पर एक थाली बनाकर मैंने जानना चाहा, "आपकी थाली में रोज़ क्या-क्या होता है?"

अधिकांश बच्चों ने केवल एक ही जवाब दिया कि अरहर की दाल और रोटी होती है। दो बच्चों ने जवाब दिया कि दाल नहीं होने पर हम कांदा, रोटी भी खाते हैं।

मैंने जानना चाहा, "आप कोई सब्ज़ी नहीं खाते हैं क्या!"

कई बच्चों की तरफ़ से जवाब आया, "हमारे घर में पापा दाल ही लाते हैं।"

इस चर्चा को और आगे ले जाती, उससे पहले ही मध्याह्न भोजन की छुट्टी हो गई। थोड़ी देर बाद जब बच्चे लौटकर वापस आए तो सागर ने मुझसे सवाल किया, "मैडम, आपके घर पर तो गैस होगी न खाना पकाने के लिए"

मैं कुछ समझ पाती तब तक उसने मुझसे दूसरा सवाल भी कर डाला, "आपको तो लकड़ी के चूल्हे पर खाना भी नहीं पकाना होता होगा!"

मैंने थोड़ा सँभलते हुए कहा, "हाँ, मेरे घर तो गैस है।" मैंने उससे जानना चाहा, "आपके घर खाना कैसे पकता है।" उसने बताया, "अभी तक तो चूल्हे पर पक रहा था पर आज हमने भी गैस के लिए फार्म

भरा है। हमें भी जल्दी गैस मिल जाएगी।" मैंने आगे जोड़ते हुए कहा, "अरे वाह! फिर तो तुम भी गैस पर पका खाना खाओगे।"

शाला की घण्टी लगने के बाद बच्चे इस कहानी की किताब को छूकर देखना और पढ़ना चाहते थे। बच्चों ने एक गोले में कहानी पढ़ना शुरू कर दिया। मुझे लगा कि आज कहानी और मैंने, दोनों ने अपने-अपने काम को एक हद तक पूरा कर दिया है।

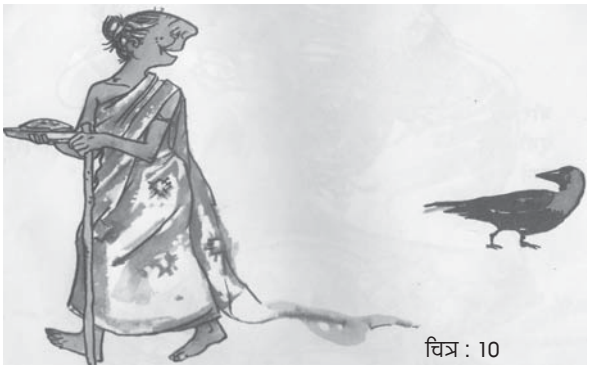
चित्र : 10

'बुढ़िया की रोटी' कहानी का समाजशास्त्र

आमतौर पर 'बुढ़िया की रोटी' कहानी के बारे में कहा जाता है कि बुढ़िया अपने हक़ को पाने के लिए कोशिश कर रही थी। लेकिन हक़ पाने की इस कोशिश में धमकाना, देख लेने की बात कहना, कमज़ोर पर दबाव बनाने के लिए लगातार किसी और ताक़तवर से मदद माँगना चलता रहता है। पॉवर का खेल है, ताक़त की नुमाइश है। और एक ताक़तवर कुत्ता, ताक़त दिखाने की जो शुरुआत करता है तो एक शृंखलाबद्ध तरीक़े से बिल्ली चूहे को, चूहा लकड़हारे को, लकड़हारा पेड़ को धमकाते चलते हैं और पेड़ कौवे से रोटी दिलवा देता है। पता नहीं, ताक़त की यह नुमाइश कितनी देर चली होगी, दस मिनट, आधा घण्टा या और ज़्यादा। कौवा तो भूखा था इसलिए उसने रोटी उठाई थी। लेकिन न खाते हुए अन्तिम दृश्य में रोटी को यथावत लौटा देता है, मानो कहानी की ज़रूरत के हिसाब से रोटी लिए ही पेड़ पर बैठा था। पाँचवीं या इससे बड़ी कक्षा के बच्चे इन बातों को समझ जाते हैं कि इस कहानी और व्यवहारिकता में काफ़ी फ़र्क़ हैं।

इस कहानी का एक पक्ष तो मैं देख पा रही थी कि रोटी पाने के लिए कैसे एक से बढ़कर एक ताक़तवर लोगों से बुढ़िया गुहार लगा रही थी।

हर कहानी के कई पहलू होते हैं। एक पक्ष है कि बुढ़िया अपने हक़ की लड़ाई लड़ रही है। रोटी की लड़ाई ही हक़ की लड़ाई है। अकसर हम लोग कहानी के इस पहलू को ही उभारते रहे हैं। इसलिए इस कहानी को बच्चों के सामने रखने का मेरा उद्देश्य था– मेरा ख़ुद का विचार बच्चों पर न थोपते हुए वे अपनी सोच व अनुभव के आधार पर चर्चा करें, और निष्कर्ष तक पहुँचें।

चित्र 1, 2, 4, 5, 6, 8, 9 और 10 पुस्तक *बुढ़िया की रोटी* चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली प्रकाशन से साभार

नंदा शर्मा पिछले डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण कार्य से जुड़ी हैं। बच्चों के साथ काम करना पसन्द है। पूर्व में एकलव्य फ़ाउण्डेशन के साथ काम किया है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के महेश्वर ब्लॉक में काम कर रही हैं।

सम्पर्क : nanda.muley@azimpremjifoundation.org